Devbhoomi Journal of Multidisciplinary Research (DJMR)
URL: www.usvv.ac.in/djmr Email: djmr@usvv.ac.in
Volume-1, Issue-1, Jan – June 2023

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम चरित्र की सार्वभौमिक - सार्वकालिक माहात्म्य

आचार्य राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी
कुलपति, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा

चैत्र शुक्ल की नवमी को सनातनी जनमानस भगवान श्री राम का जन्मोत्सव मनाता है। मान्यता है कि इसी दिन भगवान राम प्रकट हुए थे। यह भी मान्यता है कि भगवान राम कहीं गये नहीं हैं, अपितु वे हमारे मध्य ही विराजमान है। वे बारंबार हमारे मध्य अवतरित होते रहते हैं। महाकवि तुलसीदास भी अपने जीवन में उनकी उपस्थिति की अनुभूति करते हैं- *'चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर। तुलसीदास चन्दन घिसैं, तिलक देत रघुबीर।।* अतः काल की पश्चिमी अवधारणा के आधार पर कहें तो वे एक ऐतिहासिक पुरुष हैं एवं भारतीय दृष्टि से देखें तो वे सनातन, चिर-पुरातन, नित-नूतन, समदर्शी, सर्वसमावेशी, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हैं।

सनातन संस्कृति में चैत्र नवरात्रि की प्रतिपदा तिथि से ही नववर्ष का शुभारम्भ होता है। हालांकि आजकल हमारे देश में आँग्ल नववर्ष का अत्यधिक बोलबाला है, किंतु भारतीय परंपरा पर दृष्टिपात करें तो चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को ही वर्षारंभ माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि सतयुग की शुरुआत इसी दिन हुई थी एवं सृष्टि का निर्माण भी इसी दिन प्रारंभ हुआ था। ब्रह्मपुराण के अनुसार- *चैत्र मासे जगद्ब्रह्म समग्रे प्रथमेऽनि, शुक्ल पक्षे समग्रे तु सदा सूर्योदये सति।*

विदित है कि द्वापरयुग में धर्म के पर्याय युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन अपने विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। इन्हीं के नाम पर विक्रमी संवत् का प्रथम दिन प्रारंभ होता है। स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की एवं संपूर्ण मानव समाज को '*कृणवंतो विश्वम आर्यम*' का संदेश दिया था। साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक और आद्य सरसंघचालक परम पूजनीय केशव बलिराम हेडगेवार जी का जन्म नागपुर के एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हिंदू वर्ष प्रतिपदा के दिन हुआ था। सर्वविदित है कि संघ के छः अतिमहत्वपूर्ण राष्ट्रीय उत्सवों में वर्ष प्रतिपदा भी सम्मिलित है।

ध्यातव्य है कि चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा वसंत ऋतु में पड़ती है। वसंत ऋतु में वृक्षों में नए पत्ते लगते हैं, रंग-बिरंगे पुष्पों से वृक्ष आच्छादित एवं आह्लादित हो जाते है, आम्रतरु पर मंजरियाँ आ जाती हैं। आम्रमंजरी की मनमोहक मादकता सम्पूर्ण वातावरण में फैल जाती है। इसी कारण इसे मधुमास भी कहते हैं। इस समय समूचा विश्व एक नए उमंग, उत्साह से प्रफुल्लित रहता है। मानो समूची धरा भगवान् श्रीराम के आगमन की आहट से आह्लादित हो रही है।

देशज परंपरानुसार अंधकार में डूबी रात्रि में नववर्ष का स्वागत नहीं किया जाता, अपितु नववर्ष सूर्य की प्रथम रश्मि के स्वागत के साथ मनाया जाता है। इस दिन ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से घर को सुगंधित एवं प्रकाशित कर दिया जाता है। ध्वज, पताका एवं आम के पत्तों से निर्मित

तोरण आदि द्वारा इसे सुसज्जित किया जाता है। साथ ही इस दिन ब्राह्मण, कन्या, गाय, काक एवं श्वान को भोजन कराने का भी विधान है। सनातनी एक-दूसरे को नववर्ष की बधाई देते हैं, तिलक लगाते हैं एवं मिठाईयां बाँटते हैं। इस उत्सव को कर्नाटक, तेलंगाना एवं आन्ध्र प्रदेश में उगादी अर्थात युगादि के रूप में मनाते हैं। यह चैत्र मास का प्रथम दिन होता है। इसी दिन प्रारंभ होने वाले कश्मीरी नववर्ष को नवरेह के नाम से जाना जाता है। यही पर्व महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा है तो वहीं सिन्धी इस दिन को चेटी चंड कहते हैं। मदुरै में चित्रैय महीने में चित्रैय तिरूविजा नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है।

यह दिन नए संकल्प का दिन है। वर्षभर किस दिशा में चलना है, इस पर चिंतन करने का भी यह दिन है। निर्धारित मार्ग पर चलने की शक्ति मिले इसलिए देवी की उपासना भी इस दिन होती है। यह बासंती नवरात्र का पहला दिन भी होता है। देवी जो आदिशक्ति एवं उर्वरता की प्रतीक हैं उनकी उपासना का एक विशेष अर्थ है। खेतिहर समाज के लिए इससे बड़ी खुशी नहीं होती कि उनकी फसल पकने लग जाये। किसानी जीवन में यह एक बड़ा उत्सव है। इसलिए देवी जो धरती के रूप में हमारा पालन पोषण करती हैं, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु उनकी पूजा होती है एवं बासंती नवरात्र का व्रत किया जाता है।

इसी चैत्र शुक्ल की नवमी को भगवान राम माता कौशल्या के गर्भ से अवतरित होते हैं। सहज ही इच्छा होती है यह जानने की कि राम के अवतार का प्रयोजन क्या है? जिसका उत्तर गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा विरचित रामचरितमानस में मिलता है-

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।

निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार।। [1]

अर्थात उस कालखंड में आसुरी शक्तियां प्रबल होने लगी थी। जनसामान्य और विशेषकर ऋषि-मुनियों का जीवन घोर संकट में था। रावण के परिकर ऋषियों को तपस्या नहीं करने देते थे। दुराचारी रावण ने देवताओं तक को अपने अधीन कर लिया था। ऐसे में ब्राह्मण, गाय, देवता, संत आदि के उद्धार एवं आसुरी शक्तियों के उन्मूलन हेतु भगवान विष्णु मनुष्य रूप में धरती पर अवतरित हुए। एक अन्य प्रयोजन देखे तो लोगों में विश्वास भरने हेतु भी भगवान का अवतार होता है। धर्म, मनुष्यता, सद्कर्म, नीति, शील, समरसता आदि सद्गुणों पर मनुष्य का विश्वास बना रहे इसलिए भगवान प्रकट हुए। राम प्राणियों के कष्ट में तटस्थ नहीं बने वे उनके कष्ट हरण हेतु आये, *'ऐसे राम दीन हितकारी, अति कोमल करुनानिधान, बिनु कारन पर उपकारी।'*[2]

श्रीराम चरित्र को जन-जन तक सुलभ एवं सुगम बनाने वाले महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं, *'राम कौ नाम सु आपनौ सु घरू है'* यानी राम का नाम तो अपना घर है। राम का होना मतलब घर का होना, परिवार का होना, संबंधों का निर्वाह करने का संकल्प अपने भीतर दृढ़ करना। पुत्र का पिता और माता के प्रति, बड़े भाई का छोटे भाई के प्रति, पति का पत्नी के प्रति, राजा का प्रजा के प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए इसका जीवंत एवं ज्वलंत उदाहरण प्रभु श्रीराम अपने जीवनादर्श से स्थापित करते हैं। संतान का जीवन माता-पिता का ही विस्तार है। माता-पिता के बिना जीवन अस्तित्व में नहीं आता। वे ही हमारा पालन-पोषण एवं शिक्षादि का प्रबंध

करके हमें जीवन का सामना करने योग्य बनाते हैं। अतएव हम उनसे कभी उऋण नहीं हो सकते। ऐसे में उनकी सेवा हेतु तत्पर रहना हमारा परम कर्तव्य बन जाता है। किंतु दुखद सत्य यह है कि वर्तमान में संतान अपने माता-पिता की सेवा को कर्तव्य नहीं अपितु मजबूरी मानने लगे है। आधुनिकता का एक लक्षण यह भी दिख रहा है कि एक उम्र के बाद माता-पिता को वृद्धाश्रम भेज दिया जा रहा है। ऐसे में राम याद आते हैं। उनका तो आदर्श ही है, *'प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा।।'*[3] माता कैकेयी राम के प्रति कठोर होती हैं। फिर भी राम ने उनकी अवज्ञा नहीं की। उन्होंने *'सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितुमातु बचन अनुरागी।।'*[4] कहकर पुत्र धर्म की मर्यादा सुनिश्चित की। बंधुओं के बीच परस्पर प्रेम का रिश्ता परिवार को शक्ति और शांति प्रदान करता है। भाइयों के बीच प्रेम न हो तो घर में कलह होती है। घर की शांति भंग हो जाती है। इसलिए राम तो बचपन से ही अनुजों को नीति के मार्ग की शिक्षा देते हैं – *राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती। नाना भाँति सिखावहिं नीती।।*[5]

इस नैतिक शिक्षा का ही परिणाम है कि चारों दशरथ पुत्र कभी अनैतिक कार्य नहीं करते। चित्रकूट में राम-भरत मिलाप दृश्य पर हिंदी आलोचना के प्रकाशपुंज आचार्य रामचंद्र शुक्ल टिप्पणी करते हैं, *'चित्रकूट में राम और भरत का जो मिलन हुआ है वह शील और शील का, स्नेह और स्नेह का, नीति और नीति का मिलन है। इस मिलन से संघटित उत्कर्ष की दिव्य प्रभा देखने योग्य है। यह झांकी अपूर्व है।'*[6] राम का चरित्र आदर्श एवं कालजयी है। जरूरत है नि:स्वार्थ संबंधों की एक दूसरे के प्रति वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष और भेदभाव के विपरीत त्याग, सम्मान, स्नेह एवं प्रेम की। राम का जीवन ही अपूर्व है। वे राजा राम हैं लेकिन केवट के मीत और बंदर के भ्राता कहे जाने में सुख पाते हैं, *'केवट मीत कहें सुख मानत, बानर बंधु बड़ाई।'* राम को छल कपट नहीं आता एवं भाता। निर्मल मन से जो भी उनके समीप आता है वह राममय हो जाता हैं। *निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।* अपने मित्र सुग्रीव का दु:ख उनसे देखा नहीं जाता। मित्र का दु:ख उनका निजी दु:ख है - *जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी।। निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरु समाना।*[7]

राजा यानी शासक के रूप में भी राम आदर्श स्थापित करते हैं। इसलिए आश्चर्य नहीं है कि महात्मा गांधी का एकमात्र संबल राम नाम और स्वप्न रामराज्य की स्थापना थी। राजा का तो अर्थ ही है प्रजा का रंजन करने वाला। राम अयोध्या के पराक्रमी राजा हैं लेकिन प्रजा हेतु इतने सुलभ हैं कि लोकगीत में स्त्रियाँ बड़े अधिकार से कहती हैं - *'प्रण यही मेरो रघुबर जी से खेलबि होरी।'* दूसरी ओर राम राजा होने के कारण यह इच्छा अवश्य रखते हैं कि लोग उनका अनुशासन मानें। लेकिन वे यह भी कहते हैं कि यदि मेरे द्वारा कुछ भी अनुचित, अनैतिक किया जाये तो प्रजा बिना संकोच मुझे टोक दे- *'सोइ सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुसासन मानै जोई।। जौं अनीति कछु भाषौ भाई। तौं मोहि बरजहु भय बिसराई।।'*[8]

अनुकरणीय है कि जो तीनों लोकों के स्वामी हैं प्रजा के प्रति कितने प्रतिबद्ध हैं, उनसे आलोचना सुनने को तत्पर है। किंतु आज एक पार्षद तक सत्ता के मद में इतना चूर रहता है कि जनता को कुछ समझता ही नहीं। राम को पाना है, राम का होना है तो मन को सरल एवं सहज करना होगा। भेदभाव, क्षुद्रताओं सहित समस्त कलुषित मानसिकता का त्याग करना होगा, लेकिन यह हो नहीं पा रहा। आज एक ही परिवार में एक ही छत के नीचे रहने वाले सदस्य अलग-अलग प्रकार से जीवन व्यतीत करते हैं। किसी को एक-दूसरे के मन का हाल भी नहीं पता

होता। रिश्तों की ऊष्मा क्षीण हो गई है। आपसी संबंधों के कमजोर होने के कारण ही समाज में हताशा और निराशा ने घर कर लिया है। समाज जाति एवं समुदाय के आधार पर विभाजित है। जन्मभूमि के प्रति लगाव क्षीण हो रहा है। ऐसे में राम ही आशा की किरण हैं। उनका जीवन ही संदेश है। जो उपेक्षितों के प्रति अधिक कृपालु हैं - '*आदर गरीब पर करत कृपा अधिकाई।*' जो मातृभूमि को '*जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी*' कहकर महिमामण्डित करते हैं। जो ऐसे रामराज्य की स्थापना करते हैं जहाँ - *दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज्य नहिं काहुहि ब्यापा।। अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा।। नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छनहीना।।*[9] शासक के रूप में भगवान् श्रीराम के जनमंगलकारी यह गुण वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक प्रासंगिक हैं।

किंतु जातिगत एवं अन्यतर भेदभाव के कारण ही समाज में समरसता का अभाव हुआ एवं दूरियां बढ़ती गईं। समाज में हम छोटी से छोटी जरूरत हेतु परस्पर निर्भर हैं, फिर भी समाज इस भेदभाव को त्यागता नहीं है। समाज के सर्वांगीण उत्थान हेतु सभी वर्ग के लोगों का योगदान आवश्यक है। श्रीराम इस पूरक भाव को जानते हैं। इसीलिए केवट, भील, कोल, किरात, शबरी, वानर आदि से भेंट प्रसंग में उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति के जीवन और उसके कर्म के प्रति सम्मान का आदर्श प्रस्तुत किया है।

श्रीराम के चौदह वर्ष का वनवास काल वनवासियों, जीव-जंतुओं, वानरों, पक्षियों, नदी-नालों, पर्वतों, वनस्पतियों एवं प्रकृति के अन्यान्य घटकों में साहचर्य का आदर्श काल ही है। इस दौरान उन्होंने वनवासियों के सभी वर्ग के लोगों के साथ साहचर्य का संबंध स्थापित किया, उनकी खैर-खबर ली एवं उनकी खुशहाली हेतु उच्चतम आदर्श प्रस्तुत किए। श्रीराम के जीवन और व्यवहार जैसा समरसता का आदर्श उदाहरण अन्यत्र दिखाई नहीं देता। जो अस्पृश्यता जैसी घृणित भावना से भरे हैं, उन्हें भूलना नहीं चाहिए कि वनवास काल में जब श्रीराम की भेंट शबरी से हुई तो उन्होंने उनको माता के समान आदर दिया। शबरी के जूठे बेर खाने में भी संकोच नहीं किया, '*सबरी के दिये बिनु भूख न भाजी।*' मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने अपने जीवन में समाज के प्रत्येक जाति वर्ग को समुचित सम्मान दिया। आज जिस केवट समाज को वंचित समुदाय की श्रेणी में शामिल किया जाता है, श्रीराम ने उन्हें भी गले लगाकर सामाजिक समरसता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। केवट के आग्रह पर उसके हाथों अपना पैर धुलवा कर ही उसकी नाव पर चढ़े यानी केवट को उन्होंने अस्पृश्य नहीं माना। श्रीराम का निषादराज को हृदय से लगाना और आग्रह करना कि हमसे मिलने आते रहना, एक वनवासी को किसी राजपुत्र द्वारा अपने सहोदर के समान प्रेम और सम्मान देना सामाजिक उत्थान एवं समरसता की दिशा में स्थापित किया गया श्रेष्ठ मानक है। उनका स्नेह कोल-किरातों के प्रति भी वैसा ही था, जैसा अपने मित्रों, परिजनों एवं पुरजनों के साथ था। रामचरितमानस के एक प्रसंग में तथाकथित अछूत कोल-किरात रामजी के आगमन पर ऐसे हर्षित होते हैं, मानो नव निधियां उनके घर आ गई हों। स्वयं सक्षम होने के बावजूद माता सीता की खोज में श्रीराम नदी-नालों, वनस्पतियों, जीव-जंतुओं, पक्षियों व वानरों से संवाद करते हैं। *हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी।।*[10] यह विदित करता है कि इन सभी में चेतना विद्यमान है, इनसे संवाद स्थापित किया जा सकता है और ये हमारे सुख-दुःख के साथी भी हो सकते हैं। सेतु निर्माण जैसे दुरूह एवं वृहद् कार्य में भी वनवासियों, यहां तक कि गिलहरी की भी सहभागिता सुनिश्चित हुयी थी।

ऐसे प्रजावत्सल, सौमनस्य, समरस, शील, चेतन-अचेतन जगत परायण, कल्याणकारी, मर्यादापरक पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन के अनन्य गुणों से हमारा मन दृढ़ संकल्पित हो। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड राममय हो। श्रीराम की प्रकटस्थली अयोध्या में जनभागीधारी से निर्माणाधीन मंदिर रामराज्य की पुनर्स्थापना की संकल्पना सिद्धि का हेतु बने। हमारा अटूट विश्वास है कि *'कलयुग केवल नाम अधारा, सुमिर सुमिर नर उतरही पारा'।* इन्हीं शुभाशंसा सहित श्रीराम प्रकटोत्सव की हार्दिक मंगलकामना।अस्तु।

संदर्भ -

1- रामचरित मानस, बालकांड,दोहा-192
2- विनयपत्रिकासटीक,पंडित सूर्यदीन सुकुल, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ,पृष्ठ 185
3- रामचरितमानस,बालकांड, दोहा-205/7
4- रामचरितमानस,अयोध्याकांड,दोहा-41 /7
5- *रामचरितमानस,उत्तरकांड, दोहा-25/3*
6- त्रिवेणी,रामचंद्र शुक्ल,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,संस्करण-2018,पृष्ठ 103
7- *रामचरितमानस,किष्किंधाकांड,दोहा-7/1-2*
8- रामचरितमानस,उत्तरकाण्ड,दोहा- 43/4-5
9- *रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, दोहा-* 21/1,5,6
10- रामचरित मानस,अरण्यकांड, दोहा-30/9